

डॉ. रोजर ग्रीन, अमेरिकी ईसाई धर्म, सत्र 12, 19 वीं शताब्दी में रोमन कैथोलिक धर्म

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन अमेरिकी ईसाई धर्म पर अपने व्याख्यान में कह रहे हैं। यह 19वीं शताब्दी में रोमन कैथोलिक धर्म पर सत्र 12 है।

व्याख्याओं के संदर्भ में यह बिल्कुल नवीनतम है। यह व्याख्यान संख्या आठ है, 19वीं शताब्दी में रोमन कैथोलिक धर्म। हमने इसकी शुरुआत की और इसे दूसरे दिन ही शुरू किया। हम विकास को देख रहे हैं, मैं इसे यहाँ रखूँगा: हम रोमन कैथोलिक चर्च के विकास को देख रहे हैं, और फिर हम रोमन कैथोलिक चर्च के अमेरिकीकरण को देख रहे हैं।

हम अभी भी विकास के चरण में हैं। इसलिए, याद दिलाने के लिए, हमने तीन कारण बताए कि अमेरिका में आप्रवासन के दौरान रोमन कैथोलिक धर्म इतना क्यों बढ़ा। तो, हमने उन तीन कारणों के बारे में बात की।

फिर, हमने दो समस्याओं के बारे में बात की जिनका सामना रोमन कैथोलिक चर्च को यहाँ अमेरिका में करना पड़ा। एक आंतरिक समस्या है और दूसरी बाहरी समस्या। याद रखें, हमने बताया कि आंतरिक समस्या ट्रस्टीशिप की समस्या थी।

रोमन कैथोलिक चर्च इतने फैले हुए थे, सिर्फ उपनिवेशों में ही नहीं, बल्कि जैसे-जैसे आप पश्चिम और दक्षिण की ओर बढ़ते गए, इतने फैले हुए थे कि उनके पास इन चर्चों को कवर करने के लिए पादरी नहीं थे। और इसलिए, आम लोगों को चर्च चलाना शुरू करना पड़ा। और वे नियंत्रण से बाहर हो गए।

वे रोमन कैथोलिक चर्च के ट्रस्टी थे, लेकिन वे, आप जानते हैं, स्वतंत्रता और पसंद की यह अच्छी अमेरिकी भावना चाहते थे। वे पुजारियों को नियुक्त करने और पुजारियों को हटाने और सभी प्रकार की चीजों में सक्षम होना चाहते थे। इसलिए, यह वास्तव में नियंत्रण से बाहर हो गया, और रोमन कैथोलिक चर्च को इस पर लगाम लगानी पड़ी।

इसलिए, ट्रस्टीशिप एक वास्तविक समस्या बन गई क्योंकि यह पदानुक्रमित चर्च और चर्च की राजनीति द्वारा चर्च की स्थापना के तरीके के साथ मेल नहीं खाती थी। इसलिए, वहाँ वास्तविक घर्षण था। और मैं आपसे पहले से ही उस ट्रस्टीशिप और इसके कारण होने वाली समस्याओं के बारे में बात करने के लिए कहता हूँ।

यह बाहरी, आंतरिक समस्या है। हमने जिस बाहरी समस्या का उल्लेख किया वह रोमन कैथोलिक चर्च में कैथोलिक विरोधी भावना का आना था। और मुझे लगता है कि हमने अभी इसका उल्लेख किया है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि हमने इस पर बात शुरू की है।

तो, ठीक है। तो, ओह, इसका एक अच्छा उदाहरण एक पार्टी है। वास्तव में एक राजनीतिक पार्टी है जो 1837 में बनाई गई थी, और इसे नेटिव अमेरिकन पार्टी कहा जाता था।

नेटिव अमेरिकन पार्टी का गठन खास तौर पर कैथोलिक विरोधी पार्टी के तौर पर किया गया था क्योंकि वे अमेरिका में आने वाले रोमन कैथोलिक और रोमन कैथोलिक अप्रवासियों की भारी संख्या से बहुत परेशान थे। और इसलिए, ऐसी कई चीजें हैं जो वे चाहते थे, लेकिन मूल रूप से, वे रोमन कैथोलिकों के आब्रजन को रोकना चाहते थे। वे इसे राजनीतिक रूप से करना चाहते थे।

लेकिन अगर रोमन कैथोलिक अमेरिका में आते हैं, तो वे जो चाहते थे, और उन्होंने असफल रूप से इस पर जोर देने की कोशिश की, लेकिन वे चाहते थे कि लोग नागरिकता के लिए आवेदन करने से पहले 21 साल तक प्रतीक्षा करें। और उन्होंने सोचा कि अगर वे रोमन कैथोलिकों को नागरिकता के लिए आवेदन करने से पहले 21 साल तक प्रतीक्षा करवाते हैं, तो इससे रोमन कैथोलिकों को यहाँ आने से हतोत्साहित किया जाएगा। इसलिए यह एक बहुत ही कैथोलिक विरोधी पार्टी थी जिसकी स्थापना की गई थी।

पार्टी को वास्तव में इसके लिए एक उपनाम मिला। पार्टी को नो-नथिंगिज्म या नो-नथिंग पार्टी के नाम से जाना जाता था। और इसे यह उपनाम इसलिए मिला क्योंकि पार्टी, पार्टी के लोग जो कहते थे, आप जानते हैं, अगर आपसे हमारी नीतियों के बारे में पूछा जाए और अगर आपसे पूछा जाए कि हम कैथोलिकों के बारे में क्या सोचते हैं, तो बस इतना कहें कि आपको कुछ नहीं पता।

इसलिए, उन्हें प्रेस से यह उपनाम मिला: नो-नथिंग पार्टी या नो-नथिंगिज्म। उन्होंने किसी भी सवाल का जवाब देने से इनकार कर दिया। वे कुछ भी नहीं जानते, इत्यादि।

तो, यह एक तरह का भूमिगत आंदोलन था, लेकिन यह एक बहुत ही मजबूत तरह का कैथोलिक विरोधी आंदोलन था, जो रोमन कैथोलिकों के खिलाफ प्रमुख शहरों में उभरा था। एक अर्थ में मुझे लगता है कि मैंने इसे थोड़ा करीब से और व्यक्तिगत रूप से देखा होगा क्योंकि मैंने बोस्टन कॉलेज से पीएचडी की है। बोस्टन कॉलेज को शुरू करने में थोड़ी मुश्किल हुई।

उन्होंने वास्तव में चेस्टनट हिल में शुरुआत नहीं की, जहाँ यह अब है। वे वास्तव में बोस्टन शहर में शुरू हुए। लेकिन उन्हें शुरू करने के लिए चार्टर प्राप्त करने में परेशानी हुई।

यह एक जेसुइट था, जाहिर तौर पर एक जेसुइट संस्थान, लेकिन उन्हें बोस्टन कॉलेज शुरू करने के लिए चार्टर प्राप्त करने में परेशानी हुई। इसका कारण यह था कि मैसाचुसेट्स विधानमंडल कैथोलिक विरोधी था, इसलिए वे जेसुइट्स और कैथोलिकों को अपना खुद का अध्ययन स्थान शुरू करने का मौका नहीं देने वाले थे। इसलिए, विधानमंडल, जेसुइट्स और बोस्टन कॉलेज को शुरू करने की कोशिश कर रहे रोमन कैथोलिक नेतृत्व के बीच तनाव था।

एक शहरी मिथक है कि दुकानों में साइन बोर्ड लगे होते थे, जिसमें लिखा होता था कि अगर आप रोमन कैथोलिक हैं, तो आपको यहां काम करने की जरूरत नहीं है। बोस्टन कॉलेज के बारे में एक शहरी मिथक था जो शायद सिर्फ इतना ही है, शायद नहीं है, शायद यह सिर्फ एक शहरी

मिथक है। लेकिन मिथक यह था कि हार्वर्ड विज्ञापन करता था, और मैं कभी भी इसका पता नहीं लगा पाया।

इसलिए, मैंने खोज की है लेकिन इसका पता नहीं लगा पाया हूँ। हालाँकि, मिथक यह था कि हार्वर्ड विश्वविद्यालय बोस्टन के अखबारों में विज्ञापन देता था। विज्ञापन इस तरह था: यदि आप रोमन कैथोलिक हैं, तो आपको यहाँ आवेदन करने की आवश्यकता नहीं है।

और इसलिए, रोमन कैथोलिक इस बात से इतने नाराज़ हो गए कि उन्होंने अपना खुद का संस्थान बनाने का फैसला किया। जब वे आखिरकार बोस्टन चले गए, चेस्टनट हिल में, उन्होंने एक खूबसूरत नव-गॉथिक परिसर बनाया। मुझे नहीं पता कि आप में से कोई बोस्टन कॉलेज गया है या नहीं, लेकिन यह वाकई देखने लायक है।

और इसलिए, वे बोस्टन में कैथोलिक समुदाय की शक्ति का प्रदर्शन करना चाहते थे। लेकिन नो नर्थिंग, नेटिव अमेरिकन पार्टी या नो नर्थिंग पार्टी, रोमन कैथोलिकों और प्रमुख शहरों के खिलाफ एक तरह का प्रतिरोध था। इसलिए, हम इसका उल्लेख करना चाहते हैं।

अगर आप तेजी से आगे बढ़ते हैं, तो हम में से कुछ लोग इस कमरे में जॉन एफ. कैनेडी के चुनाव के समय मौजूद थे। अगर आप जॉन एफ. कैनेडी के चुनाव के समय को तेजी से आगे बढ़ाते हैं, तो कैथोलिक विरोधी भावना काफी हद तक उभर रही थी क्योंकि राष्ट्रपति पद के लिए एक रोमन कैथोलिक उम्मीदवार था। और लोग डरते थे, आप जानते हैं, अगर जॉन एफ. कैनेडी राष्ट्रपति बन गए, तो पोप देश चलाएंगे और इसी तरह।

वह छाया राष्ट्रपति होंगे। और मेरा मतलब है, जेएफके के रोमन कैथोलिक राष्ट्रपति बनने के बारे में सभी तरह की भावनाएँ थीं। लेकिन फिर भी, उन्होंने ऐसा किया, जाहिर है।

तो इस तरह की बातें। ठीक है, अब हम अभी भी इस विकास व्यवसाय में हैं। रोमन कैथोलिक चर्च, ट्रस्टीशिप की समस्या के मद्देनजर, लेकिन विशेष रूप से कैथोलिक विरोधी भावनाओं के मद्देनजर, जानता था कि उन्हें खुद को स्थापित करना होगा, और वे जानते थे कि कैथोलिकों को कैथोलिकों का ख्याल रखना होगा।

कैथोलिक समुदाय इतने बड़े थे, बोस्टन इसका आदर्श उदाहरण है। इसलिए, उन्हें पता था कि उन्हें ऐसा करना होगा। इसलिए, वे जो करते हैं, जो रोमन कैथोलिक चर्च करता है, वह इन प्रमुख शहरों में आने वाले रोमन कैथोलिकों को प्रदान करने के तीन तरीके विकसित करता है, इस प्रमुख शहर में आने वाले अप्रवासियों को प्रदान करता है।

रोमन कैथोलिकों को व्यापक संस्कृति में लाने और उन्हें व्यापक संस्कृति को समझने में मदद करने के लिए उन्होंने तीन प्रमुख तरीके अपनाए। ठीक है, मैं उन तीन तरीकों का उल्लेख करूँगा। पहला तरीका यह था कि उन्होंने स्कूल विकसित किए।

उन्होंने रोमन कैथोलिक बच्चों के लिए पारोचियल स्कूल और रोमन कैथोलिक स्कूल विकसित किए। और इस तरह, बच्चों को व्यापक संस्कृति के बीच एक अच्छी कैथोलिक शिक्षा मिलेगी।

इसलिए, पहला तरीका यह था कि रोमन कैथोलिक बच्चों को यहाँ अमेरिका में अच्छी शिक्षा मिले।

और एक ऐसे स्कूल सिस्टम में होना जहाँ उन्हें कैथोलिक विरोधी दबाव महसूस न हो। वे स्कूल सिस्टम में घर जैसा महसूस करेंगे। तो यह नंबर एक है।

दूसरा तरीका यह था कि धर्मार्थ संस्थाओं, अस्पतालों या ऐसे स्थानों का विकास किया जाए जहाँ आप वृद्धों की देखभाल कर सकें। ताकि ये धर्मार्थ संस्थाएँ रोमन कैथोलिकों की देखभाल करने के लिए वास्तव में आगे आएँ। रोमन कैथोलिकों को यह महसूस होगा कि उनकी देखभाल की जा रही है, उनकी चिकित्सा आवश्यकताओं का ध्यान रखा जा रहा है, उनके वृद्धों की ज़रूरतों का ध्यान रखा जा रहा है, या रोमन कैथोलिक अनाथालयों में बच्चों की देखभाल की जा रही है।

तो, यह बहुत मजबूत धर्मार्थ नेटवर्क संयुक्त राज्य अमेरिका में स्थापित किया गया था। और निश्चित रूप से, आप जानते होंगे कि यह आज भी सच है। मेरा मतलब है, आप अस्पतालों और ऐसी जगहों को देखें जो इसका हिस्सा हैं।

ठीक है। रोमन कैथोलिकों को बनाए रखने का तीसरा तरीका यह है कि उन्हें संस्कृति में सुरक्षित रखा जाए, फिर भी संस्कृति से पूरी तरह अलग न किया जाए। लेकिन तीसरा तरीका प्रेस के ज़रिए था।

बहुत सारे कैथोलिक अखबार प्रकाशित हुए। और कैथोलिक दृष्टिकोण देते हुए कैथोलिक दृष्टिकोण दिया। और मैंने पायलट को इसलिए चुना क्योंकि यह देश का सबसे पुराना कैथोलिक अखबार है।

और यह अभी भी प्रकाशित हो रहा है। और इसकी शुरुआत बोस्टन से हुई थी। इसलिए, बोस्टन को इतने सालों के बाद प्रकाशित होने वाले पहले अखबार को प्रकाशित करने में गर्व महसूस होता है।

और अखबार के उपशीर्षक को देखिए, पायलट, कैथोलिक परिप्रेक्ष्य प्राप्त करें। कैथोलिक परिप्रेक्ष्य प्राप्त करें। इसलिए, अखबार और प्रकाशन भी महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

तो हम कैथोलिक आप्रवासियों की वफ़ादारी कैसे बनाए रखते हैं? हम इसे शिक्षा के ज़रिए करते हैं। हम इसे दान-पुण्य के कामों और दान-पुण्य की संस्थाओं के ज़रिए करते हैं। और हम कैथोलिक दृष्टिकोण जानने के लिए अखबारों के ज़रिए ऐसा करते हैं।

तो इस तरह से चीज़ें बढ़ने लगीं। इस तरह से अमेरिका में इसका विकास शुरू हुआ। और जहाँ हम रहते हैं, उससे ज़्यादा मज़बूत कोई जगह नहीं है।

बोस्टन अमेरिकीकृत हो गया, जैसा कि हम बस एक मिनट में देखेंगे। तो, क्या आपके पास पहले भाग के बारे में कोई सवाल है? ठीक है। तो, दूसरा भाग रोमन कैथोलिकों का अमेरिकीकरण है।

हाँ। वे बढ़ रहे हैं। और अब, हमें यह जानना होगा कि रोमन कैथोलिक चर्च उनकी देखभाल कैसे करेगा। रोमन कैथोलिक चर्च उनकी सेवा कैसे करेगा? इसने इन तीन तरीकों से उनकी सेवा की, उनकी मदद की, और उन्हें अमेरिका में संस्कृति और कैथोलिक जीवन में लाया। इस वजह से, इसने और भी अधिक विकास को प्रेरित किया।

बोस्टन की तरह कैथोलिकों को भी घर जैसा ही महसूस होता था क्योंकि उनके पास अपने स्कूल, अस्पताल, अनाथालय, समाचार पत्र, बोस्टन कॉलेज और अन्य कैथोलिक कॉलेज थे। इसलिए, यह उन्हें यह महसूस कराने का एक तरीका है कि अमेरिका उनका घर है। और उन्हें व्यापक संस्कृति में कैथोलिक विरोधी भावनाओं से डरने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि आपके पास उनके लिए ऐसी जगहें हैं।

हाँ। क्या इससे मदद मिलेगी? ज़रूर। ठीक है।

इन सबका अमेरिकीकरण। यह सब यहाँ कैसे हुआ? ठीक है। अमेरिकीकरण 19वीं सदी के उत्तरार्ध में शुरू हुआ।

इसलिए, वे बड़ी संख्या में आ रहे हैं। उनका ख्याल रखा जा रहा है। 19वीं सदी का दूसरा भाग, खास तौर पर 1852 की तारीख, अमेरिकी कैथोलिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण तारीख बन गई है।

इसका इतना महत्वपूर्ण कारण यह है कि अमेरिका में रोमन कैथोलिक चर्च ने अपना पहला सम्मेलन या पहली परिषद, जिसे हम प्लेनरी काउंसिल या पूर्ण परिषद कहेंगे, 1852 में आयोजित की थी। उन्होंने इसे अपने प्रमुख शहर बाल्टीमोर में आयोजित किया था। याद रखें, मैरीलैंड की स्थापना एक ऐसी जगह के रूप में की गई थी जहाँ रोमन कैथोलिक घर जैसा महसूस कर सकें और इसी तरह की अन्य बातें।

तो, बाल्टीमोर अमेरिका में पहले आर्कबिशप की सीट बन गया, और इसी तरह आगे भी। तो, बाल्टीमोर, 1852। ठीक है।

1852 में पूर्ण परिषद का उद्देश्य एक बुनियादी सवाल से निपटना था। और सवाल यह था कि रोमन कैथोलिक चर्च व्यापक संस्कृति में कैसे घर जैसा महसूस करेगा? रोमन कैथोलिक चर्च ऐसा क्या कर सकता है जिससे हम इस राष्ट्रीय जीवन में संस्कृति का हिस्सा बन सकें, एक बड़ी भूमिका निभा सकें और उसका हिस्सा बन सकें? इसलिए, उन्होंने वास्तव में 1852 में बैठकर रोमन कैथोलिक चर्च के व्यापक संस्कृति और राष्ट्रीय जीवन के साथ संबंधों के बारे में सोचने की कोशिश की। हमें उससे कैसे संबंधित होना चाहिए? ठीक है। इसके बाद 19वीं सदी के उत्तरार्ध में सबसे महत्वपूर्ण रोमन कैथोलिक नेता आते हैं।

और, ओह, माफ़ करना, मुझे अभी यहाँ वापस जाना है। उसका नाम जेम्स गिबन्स था। जेम्स गिबन्स।

ठीक है। जेम्स गिबन्स अंततः बिशप, आर्कबिशप और कार्डिनल बन गए। जेम्स बिशप बाल्टीमोर के कार्डिनल बन गए और 19वीं सदी के उत्तरार्ध में रोमन कैथोलिक चर्च जीवन में अग्रणी व्यक्ति बन गए।

आप उनकी तिथियाँ देख सकते हैं। वे 1886 में कार्डिनल बने, लेकिन वे 1921 तक जीवित रहे। इसलिए बाल्टीमोर में उनका नेतृत्व का जीवन बहुत लंबा रहा।

तो, जेम्स गिबन्स ने जो किया, या जो उन्होंने हासिल किया, उसने रोमन कैथोलिक धर्म और व्यापक संस्कृति के बीच तनाव को कम करने में मदद की - रोमन कैथोलिक चर्च और व्यापक संस्कृति के बीच संभावित तनावों को नेविगेट करने या बातचीत करने में मदद की। और इस तरह लोगों को यह समझने में मदद मिली कि रोमन कैथोलिक चर्च को व्यापक संस्कृति में कैसे घर जैसा महसूस करना चाहिए और व्यापक संस्कृति में योगदान देना चाहिए।

ठीक है। तो, मैं उनकी दो उपलब्धियों का जिक्र करना चाहूँगा। मेरा मतलब है, यही उनका मुख्य लक्ष्य है, और उन्होंने इसे पूरा कर लिया है।

और बाईं ओर गिबन्स हैं। तो, यहाँ जेम्स गिबन्स थे। लेकिन मैं उनकी दो उपलब्धियों का जिक्र करना चाहूँगा।

सबसे पहली बात, बेशक, वह रोमन कैथोलिक चर्च की तरह ही चर्च और राज्य के पृथक्करण के सच्चे समर्थक थे। वह यह बिल्कुल स्पष्ट करना चाहते थे कि रोमन कैथोलिक चर्च सरकार पर कब्जा करने की इच्छा नहीं रखता। दूसरी ओर, रोमन कैथोलिक चर्च पूजा करने के लिए स्वतंत्र होना चाहता है।

जैसा कि ईश्वर ने हमें पूजा करने की स्वतंत्रता दी है, रोमन कैथोलिक चर्च भी पूजा करने के लिए स्वतंत्र होना चाहता है। यह सरकारी नियंत्रण या बाधाओं से मुक्त होना चाहता है। और इसलिए वह चर्च और राज्य के अलगाव के सच्चे समर्थक थे।

अब, ठीक है। तो, वह किसके साथ जाता है? कांग्रेसनलिस्ट जैसे लोगों के साथ। 19वीं सदी से ही उनके साथ ऐसा होता आया है।

बैपटिस्ट हमेशा से चर्च और राज्य के पृथक्करण की मांग करते रहे हैं। इसलिए, बहुत से प्रोटेस्टेंट भी थे जो चर्च और राज्य के पृथक्करण में दृढ़ता से विश्वास करते थे। इसलिए, वह प्रोटेस्टेंट समझ की बहुत मजबूत किस्म की अपील कर रहे हैं।

वह भी इस बात में विश्वास करते हैं। तो यह एक बात है। दूसरी बात जिसके लिए जेम्स गिबन्स जाने जाते थे, वह यह थी कि वह मजदूर वर्ग के पक्ष में थे।

इनमें से बहुत से अप्रवासी, इनमें से बहुत से कैथोलिक अप्रवासी, श्रमिक वर्ग से थे, और उनका जीवन वाकई बहुत कठिन था। हम इस बारे में बाद में किसी अन्य व्याख्यान में बात करेंगे, लेकिन मैनहट्टन के लोअर ईस्ट साइड में, 1900 में सदी के अंत में मैनहट्टन का लोअर ईस्ट

साइड, यानी 19वीं सदी के अंत से लेकर 20वीं सदी की शुरुआत तक, मैनहट्टन का लोअर ईस्ट साइड पूरी दुनिया में सबसे अधिक आबादी वाला स्थान था। मैनहट्टन के लोअर ईस्ट साइड में उन कुछ वर्ग ब्लॉकों से ज़्यादा आबादी वाला कोई स्थान नहीं था।

यह पूरी तरह से भीड़भाड़ वाला था। मकान पूरी तरह से मजदूर वर्ग से भरे हुए थे, और वे केवल रोमन कैथोलिक नहीं थे, लेकिन निश्चित रूप से, गिबन्स रोमन कैथोलिकों के बारे में चिंतित हैं। लेकिन वह चर्च को कामकाजी लोगों के पक्ष में रखने जा रहा है, और वह मेहनतकश लोगों, कामकाजी कैथोलिकों की यथासंभव मदद करने जा रहा है, जितना वह वेतन, बेहतर वेतन, बेहतर काम करने की स्थिति, बेहतर रहने की स्थिति और इसी तरह की अन्य चीजों के माध्यम से कर सकता है।

अब, जब हम वाल्टर रौशनबुश के बारे में बात करते हैं, तो हम इस बारे में बहुत कुछ बात करने जा रहे हैं, लेकिन यहाँ, रोमन कैथोलिक चर्च कामकाजी लोगों के पक्ष में खड़ा है। अब, उस समय पोप दाईं ओर है। पोप पोप लियो XIII थे, और वे 1878 से 1903 तक पोप थे, पोप लियो XIII।

अब, पोप लियो XIII, गिबन्स के मजदूर वर्ग और मेहनतकश लोगों के पक्ष में इतना मज़बूत रुख रखने का एक कारण यह था कि पोप लियो XIII अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी मजदूर लोगों, मजदूर वर्गों के पक्ष में थे। और उन्होंने पोप के रूप में अपने पद से यह बात बहुत स्पष्ट की। इस समय रोमन कैथोलिक चर्च से निकलने वाले सबसे महान दस्तावेज़ों में से एक रेरम नोवारम नामक दस्तावेज़ था।

आप में से कुछ लोगों ने शायद दूसरे कोर्स में इस बारे में बात की होगी, लेकिन रेरम नोवारम उनका विश्वव्यापी पत्र था, जिसमें रोमन कैथोलिक चर्च को श्रमिक वर्गों के पक्ष में रखा गया था और उनकी मदद करने की कोशिश की गई थी। तो ये दो चीज़ें थीं जिनके लिए वे बहुत जाने जाते हैं, लेकिन ये दो चीज़ें हैं जो हमारे दिमाग में बनी हुई हैं: चर्च और राज्य का पृथक्करण और श्रमिक वर्गों के पक्ष में होना। ठीक है, हम रोमन कैथोलिक चर्च के अमेरिकीकरण के बारे में कुछ और बातें कहने जा रहे हैं।

जब तक हम पोप लियो XIII के बारे में बात कर रहे हैं, आइए हम उनके साथ बस एक मिनट रुकें। पोप लियो XIII इस बात से बहुत घबराए हुए थे कि अमेरिका में रोमन कैथोलिक चर्च दुनिया भर के रोमन कैथोलिक चर्च और पोप के अधिकार से अलग हो रहा था। इसलिए, जबकि पोप लियो XIII श्रमिक वर्गों के पक्ष में खड़े होने में मददगार थे, वे रोमन कैथोलिक चर्च के अमेरिकीकरण के बारे में चिंतित थे।

उन्हें डर था कि रोमन कैथोलिक चर्च खतरे में पड़ जाएगा, शायद आप कह सकते हैं, बहुत ज़्यादा अमेरिकी हो जाने और रोमन कैथोलिक न होने और रोमन कैथोलिक सिद्धांतों और सिद्धांतों पर टिक न पाने के कारण। उन्होंने वास्तव में इस बारे में और रोमन कैथोलिक चर्च के अमेरिकीकरण के खतरों के बारे में एक दस्तावेज़ लिखा था। वह इस बारे में बहुत घबराए हुए थे क्योंकि रोमन कैथोलिक चर्च को पदानुक्रम के नियंत्रण में रहने की ज़रूरत थी।

व्याख्यान के अंत में, मैं इस बारे में कुछ बताऊंगा, लेकिन हम इस पर वापस आएं। ठीक है, अब, कुछ घटनाएँ हुई जिन्होंने रोमन कैथोलिक चर्च के अमेरिकीकरण को वास्तव में मजबूत किया। एक घटना 1908 में हुई।

1908 में, अमेरिकी रोमन कैथोलिक चर्च को रोम से मिशनरी दर्जा वापस ले लिया गया। दूसरे शब्दों में, रोमन कैथोलिक चर्च अब अमेरिका को मिशनरी क्षेत्र के रूप में नहीं देखता था। उसे अब मिशनरी क्षेत्र होने की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि वह आत्मनिर्भर था।

इसलिए, 1908 में इसे अब मिशनरी दर्जा नहीं माना गया। अमेरिका में यह मान्यता थी कि रोमन कैथोलिक चर्च अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है। और इससे, बेशक, रोमन कैथोलिक चर्च के अमेरिकीकरण में मदद मिली, इसमें कोई संदेह नहीं है।

और फिर, 1914 से 1918 तक, प्रथम विश्व युद्ध के साथ, अमेरिका में रोमन कैथोलिकों ने अपने प्रोटेस्टेंट भाइयों और बहनों और यहूदी भाइयों और बहनों के साथ मिलकर सेवा की। रोमन कैथोलिकों ने प्रथम विश्व युद्ध में नेक काम किया। और याद रखें, प्रथम विश्व युद्ध इतना विनाशकारी युद्ध था, यह कल्पना करना लगभग असंभव है कि प्रथम विश्व युद्ध कितना विनाशकारी था।

हालाँकि, प्रथम विश्व युद्ध में दूसरों के साथ-साथ अपना साहस दिखाने के लिए रोमन कैथोलिक चर्च और अमेरिका में रोमन कैथोलिकों की वास्तव में प्रशंसा की गई थी। तो इसने रोमन कैथोलिकों के अमेरिकीकरण को भी आगे बढ़ाया, इसमें कोई संदेह नहीं है। ठीक है, तो जब आप सदी के मध्य या उसके आसपास पहुँचते हैं, तो रोमन कैथोलिक चर्च अच्छी तरह से स्थापित हो चुका होता है।

मेरे पास बोस्टन के एक कार्डिनल के बारे में एक लंबा लेख है, और उसका नाम विलियम हेनरी ओ'कॉनेल था। यह विलियम हेनरी ओ'कॉनेल है। लेकिन 37 साल तक, वह बोस्टन में चर्च का नेता था।

और उन्होंने एक उद्धरण दिया। उन्होंने कहा, प्यूरिटन गुजर चुका है, बोस्टन के बारे में बात करते हुए, प्यूरिटन गुजर चुका है, कैथोलिक बना हुआ है। अब जब बोस्टन में प्रोटेस्टेंट नेताओं ने इसे लिया, तो उनके लिए इसे सुनना थोड़ा मुश्किल था।

लेकिन एक तरह से, वह सही थे कि बोस्टन के जीवन, सांस्कृतिक जीवन, राजनीतिक जीवन, सामाजिक जीवन और धार्मिक जीवन पर प्यूरिटन प्रभाव खत्म हो चुका है। उन्होंने कहा कि बोस्टन अब एक रोमन कैथोलिक शहर है, जो कि मूल रूप से सच था, और अब भी मूल रूप से सच है। मेरा मतलब है, जब आप बोस्टन को राजनीतिक, धार्मिक और अन्य रूप से देखते हैं, तो रोमन कैथोलिक धर्म वास्तव में बोस्टन के सार्वजनिक जीवन पर हावी है, इसमें कोई संदेह नहीं है।

तो यह अमेरिकीकरण की कहानी बताता है, और यह वास्तव में बहुत उल्लेखनीय है कि 1852 के बाद से अमेरिकी ईसाई धर्म में क्या हुआ है - इस अमेरिकीकरण की बात के बारे में बस एक

शब्द। यहाँ, मैं यह अंत में कहता हूँ, लेकिन इसका किसी भी चीज़ से कोई लेना-देना नहीं है, लेकिन यह ठीक है।

आप दुनिया भर में फैले रोमन कैथोलिक धर्म को कभी भी इस आधार पर नहीं माप सकते कि आप अमेरिका में अमेरिकी कैथोलिकों के बारे में क्या सुनते हैं। आप में से कुछ लोग रोमन कैथोलिक चर्च से जुड़े हो सकते हैं। यह आपके संप्रदाय या संबद्धता का स्थान हो सकता है।

हालाँकि, अमेरिका में रोमन कैथोलिक चर्च दुनिया भर के बाकी रोमन कैथोलिक चर्चों की तुलना में काफी उदार है। इसलिए, आप दुनिया भर में फैले रोमन कैथोलिक धर्म को अमेरिकी कैथोलिक धर्म से नहीं माप सकते। मुझे यह बात निश्चित रूप से पता चली।

मेरी पीएचडी बोस्टन कॉलेज से है। और इसलिए, बोस्टन कॉलेज में पीएचडी के दौरान, मुझे बोस्टन कॉलेज में अपने रोमन कैथोलिक दोस्तों से बहुत सी ऐसी बातें पता चलीं, जो मुझे रोमन कैथोलिक इतिहास या रोमन कैथोलिक सिद्धांत या पोपसी या जो भी हो, से थोड़ी अलग लगीं। तो, यह एक जेसुइट स्कूल है, और जेसुइट्स पोप की आज्ञाकारिता की शपथ लेते हैं।

लेकिन मैंने कभी-कभी जेसुइट पादरी को पोप के बारे में ऐसी बातें कहते सुना जो उन्हें नहीं कहनी चाहिए थीं। तो, ऐसे समय थे जब आप इसे माप नहीं सकते थे। इसका एक उदाहरण है जब पोप जॉन पॉल द्वितीय अपनी पहली यात्रा के लिए अमेरिका आए थे।

अब यहाँ 20वीं सदी और 21वीं सदी के महानतम धर्मपरायण पोपों में से एक जॉन पॉल द्वितीय हैं। वे अमेरिका आए और वहाँ उन्हें जो कुछ भी झेलना पड़ा, उसके लिए वे पूरी तरह से तैयार नहीं थे। और मैं कभी नहीं भूलूँगा कि वे अपनी कुर्सी पर बैठे थे।

वहाँ एक बहुत बड़ी भीड़ थी, और लोगों के लिए एक खुला माइक था जहाँ वे जॉन पॉल द्वितीय से कैथोलिक चर्च और अन्य विषयों के बारे में सवाल पूछ सकते थे। और जब एक महिला माइक पर आई तो मैं उनके चेहरे पर जो भाव देख रहा था उसे मैं कभी नहीं भूल सकता। वह एक नन थी, और जब वह माइक पर आई, तो उसने पूछा कि हम रोमन कैथोलिक चर्च में महिला पादरी कब रखने जा रहे हैं। खैर, बेचारे जॉन पॉल द्वितीय को लगभग दिल का दौरा पड़ गया।

महिलाएं, जो रोमन कैथोलिक चर्च में महिला पादरियों पर चर्चा कर रही हैं? हो सकता है कि अमेरिकी ऐसा कर रहे हों, लेकिन कोई और ऐसा नहीं कर रहा है। और यह पोप निश्चित रूप से ऐसा नहीं है। इसलिए, वह हेडलाइट्स में हिरण की तरह था।

मेरा मतलब है, जब उनके पास यह सवाल था। तो, रोमन कैथोलिक चर्च के अमेरिकीकरण ने एक दिलचस्प तरह का जीवन ले लिया है और उसी की ओर मुड़ गया है। लेकिन यह वहाँ है।

यही हुआ। ठीक है। यह आठवां नंबर है, 19वीं सदी में रोमन कैथोलिक धर्म।

ठीक है। इस बारे में कोई सवाल है? आप में से कुछ लोग रोमन कैथोलिक हो सकते हैं। कोर्स के अंत में, हम एक-दूसरे को बताएंगे कि हमारा संप्रदाय या संबद्धता क्या है, अगर आप चाहें तो।

इसमें किसी को भी प्रवेश करने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन यदि आप चाहें तो। तो, यह देखना दिलचस्प होगा कि हमारे यहाँ कक्षा में किस प्रकार की विविधता है। लेकिन इसके बारे में कोई प्रश्न? ठीक है।

हम व्याख्यान संख्या नौ, गुलामी और चर्च की ओर बढ़ते हैं। गुलामी और चर्च, व्याख्यान नौ। ठीक है।

मैं यहाँ से शुरू करने जा रहा हूँ। ठीक है। गुलामी और चर्च।

सबसे पहले, मैं पृष्ठभूमि जानना चाहता हूँ। आप पृष्ठभूमि संख्या A देख सकते हैं। और पृष्ठभूमि के संदर्भ में बहुत कुछ कहा जाना बाकी है। इसलिए, हम अभी इस पर चर्चा नहीं करेंगे।

इसलिए, हमें इसे बुधवार को भी जारी रखना होगा। लेकिन मैं इस पर आपका ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ; मुझे लगता है कि हम गुलामी के बारे में वस्तुनिष्ठ रूप से बात करते हैं। हम इसके बारे में अकादमिक रूप से बात करते हैं।

लेकिन मैं हमेशा इस व्याख्यान की शुरुआत गुलामी पर एल्किन की किताब पढ़कर करता हूँ। और मैं चाहता हूँ कि आप इस बात को समझें कि गुलामी की यह पूरी संस्था कितनी विनाशकारी, कितनी पूरी तरह विनाशकारी थी। और यह सिर्फ़ तीन पैराग्राफ़ों में है।

तीन पैराग्राफ़ में बीच वाले हिस्से के बारे में बात की गई है। तो, यह शॉक और डिटैचमेंट नामक एक सेक्शन है। तो, यहाँ बताया गया है कि जब हमारे पास गुलाम थे, तो लोगों, इंसानों के साथ क्या हुआ।

हम मान सकते हैं कि गुलाम बनने वाले हर अफ्रीकी को एक ऐसे अनुभव से गुज़रना पड़ा जिसका कच्चा मानसिक प्रभाव चौंका देने वाला रहा होगा और जिसके परिणाम उसके साथ पहले हुई किसी भी घटना से कहीं ज़्यादा थे। इसलिए, कुछ प्रयास किए जाने चाहिए कि उस गुलामी की मुख्य घटनाओं के साथ होने वाले झटकों की श्रृंखला को चित्रित किया जाए। ऐसा प्रतीत होता है कि अधिकांश गुलामों को स्थानीय युद्धों में लिया गया था, जिसका अर्थ था कि कोई भी व्यक्ति, न तो उच्च पद का व्यक्ति और न ही वीर योद्धा, पकड़े जाने और गुलाम बनाए जाने से सुरक्षित था।

बहुत से लोग अपने गांवों पर अचानक हुए हमलों में पकड़े गए। और चूंकि व्यापार के लिए बिचौलियों के रूप में काम करने वाली जनजातियाँ उस कार्य को जारी रखने के लिए बंदियों की नियमित आपूर्ति पर निर्भर हो गई थीं, इसलिए युद्ध और छापामार अभियानों के बीच का अंतर बहुत धुंधला हो गया। कई महीनों तक चलने वाले और अपने बचे हुए लोगों को हमेशा के लिए बदल देने वाले अनुभव में पहला झटका इस प्रकार पकड़े जाने का झटका था।

यह याद दिलाने का प्रयास है कि अफ्रीका में दासता हर दिन होती थी, लेकिन व्यक्ति के लिए यह सिर्फ़ एक बार हुआ। दूसरा झटका, समुद्र की ओर लंबी यात्रा, कई हफ़्तों तक दुःस्वप्न को

खींचती रही। चमकते सूरज के नीचे, भाप उगलते जंगल से होते हुए, उन्हें गर्दन से बंधे जानवरों की तरह साथ ले जाया जाता था।

दिन-ब-दिन, आठ या उससे ज़्यादा घंटे तक, वे काँटेदार झाड़ियों, सूखे नरकटों और पत्थरों पर नंगे पाँव लड़खड़ाते हुए चलते थे। तट पर पहुँचने वाले हर थके हुए पुरुष और महिला के अनुभव में कठिनाई, प्यास, क्रूरता और लगभग भूखमरी शामिल थी। एक यात्री ने बताया कि उसने गुलामों के कारवां के एक मार्ग पर सैकड़ों सफ़ेद कंकाल बिखरे हुए देखे थे।

लेकिन फिर, जिस व्यक्ति में हमें दिलचस्पी होनी चाहिए वह वह व्यक्ति है जो बच गया, वह जिसने पूरे अनुभव को झेला जिसकी यह तो बस शुरुआत थी। अगला झटका, इसके साथ आने वाली नई शारीरिक पीड़ाओं के अलावा, यूरोपीय दास व्यापारियों की बिक्री थी। व्यापारिक स्टेशनों के पास बाड़ों में भीड़ लगाकर रात भर, कभी-कभी कई दिनों तक वहाँ रखे जाने के बाद, दासों को जाँच के लिए बाहर लाया जाता था।

जिन लोगों को अस्वीकार कर दिया गया था, उन्हें भूख से मरने के लिए छोड़ दिया गया था। बचे हुए लोगों को, जिन्हें लाया गया था, उन्हें ब्रांड किया गया, सीसे के टैग पर नंबर अंकित किए गए और जहाज़ पर ले जाया गया। इसके बाद जो घटना हुई, वह लगभग इतनी लंबी और स्तब्ध करने वाली थी कि उसे महज एक झटका नहीं कहा जा सकता था, वह मध्य मार्ग का खौफ़ था, जो किसी भी आदमी, काले या गोरे, के लिए क्रूरता थी, जो कभी भी इसमें शामिल हुआ था।

जहाज़ों के होल्ड, जो तड़पते और घुटते हुए लोगों से भरे हुए थे, गंदगी और महामारी के बदबूदार नरक बन गए। दो महीने की भयानक यात्रा में बीमारी, मौत और क्रूरता की कहानियाँ गवाही में भरी पड़ी हैं, जिसने ब्रिटिश दास व्यापार को हमेशा के लिए खत्म करने में बहुत मदद की। दासता की प्रक्रिया में अंतिम झटका वेस्ट इंडीज में नीग्रो के प्रवेश के साथ आया।

ब्रायन एडवर्ड्स, एक गुलाम जहाज के आगमन का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि कैसे, श्रम की कमी के समय, लोगों की भीड़ जहाज पर चढ़ जाती थी, गुलामों के साथ दुर्व्यवहार करती थी और उन्हें दहशत में डाल देती थी। जमैका विधानमंडल ने अंततः, उद्धरण, इस भयावहता को सही किया, बिना उद्धरण के, यह अधिनियम बनाकर कि गुलामों को किनारे पर रखा जाए। एडवर्ड्स को सार्वजनिक रूप से नग्न अवस्था में नीग्रो को देखकर एक तरह की शर्मिंदगी महसूस हुई, जैसा कि अन्य नेताओं को महसूस हुआ।

फिर भी यहाँ, उन्हें कोई परवाह नहीं थी। उन्होंने अपने अतीत के लिए विलाप के बहुत कम संकेत दिखाए; वे दास व्यापारियों या अपनी भविष्य की स्थिति के बारे में बात कर रहे थे, लेकिन आम तौर पर बेचे जाने की बहुत उत्सुकता व्यक्त की। इसके बाद, जो मसाला प्रक्रिया हुई, उसने उन चरणों की श्रृंखला को पूरा किया जिसके द्वारा अफ्रीकी नीग्रो गुलाम बन गए।

मृत्यु दर बहुत अधिक थी। कुल 15 मिलियन में से पहले निकाले गए लोगों में से एक तिहाई की मृत्यु मार्च और व्यापारिक स्टेशनों पर हुई थी। एक तिहाई की मृत्यु मध्य मार्ग और सीज़निंग के दौरान हुई।

चूँकि उत्तरी अमेरिकी बागानों में आने वाले अधिकांश अफ्रीकी मूल के दास सीधे नहीं आए थे, बल्कि वेस्ट इंडीज़ के ज़रिए आयात किए गए थे, इसलिए कोई यह मान सकता है कि आम दासों ने कुछ ऐसा ही अनुभव किया होगा जैसा कि ऊपर बताया गया है। यह वह व्यक्ति था, तीन में से एक, जो इन सब से गुज़रा था और जीया था और हमारी बंद व्यवस्था में प्रवेश करने वाला था। अगर वह बच गया और उसमें समायोजित हो गया तो वह कैसा होगा? तो, बस इसी तरह, मुझे लगता है कि यह छवि उन झटकों के लिए महत्वपूर्ण है जो उन दासों के साथ हुए थे जिन्हें पकड़ लिया गया था, समुद्र में ले जाया गया था, जहाजों पर रखा गया था, बेचा गया था, और इसी तरह।

चूँकि हम गुलामी के बारे में बात कर रहे हैं, इसलिए हम सिर्फ़ अकादमिक रूप से इसके बारे में बात नहीं कर रहे हैं, बल्कि हम इस बारे में उस नज़रिए से भी बात कर रहे हैं, हमें इस बारे में उस नज़रिए से भी बात करने की ज़रूरत है। ठीक है, तो हम पृष्ठभूमि में हैं। मैं सबसे पहले ग्रेट ब्रिटेन और ग्रेट ब्रिटेन में दास व्यापार के उन्मूलन के बारे में बात करके पृष्ठभूमि शुरू करने जा रहा हूँ।

और फिर मुझे उम्मीद है कि बुधवार को मैं आपको एक क्लिप दिखा पाऊंगा, एक फिल्म क्लिप जो मेरे पास है। मैं अभी पावरपॉइंट को बाधित नहीं करूंगा, लेकिन मुझे उम्मीद है कि हम बुधवार को उससे शुरुआत कर सकते हैं। लेकिन जब हम ग्रेट ब्रिटेन से शुरुआत करते हैं, तो हमें एक तरह से ग्रेट ब्रिटेन के महान नायकों में से एक से शुरुआत करनी होगी, और उसका नाम विलियम विल्बरफोर्स था।

ये विलियम विल्बरफोर्स की तारीखें हैं। विलियम विल्बरफोर्स संसद के सदस्य थे। जाहिर है कि संसद का सदस्य बनने के लिए आपको अमीर होना चाहिए, और आपको अच्छे परिवार से आना चाहिए, इत्यादि।

आपके पास पैसा और पद वगैरह था। लेकिन विलियम विल्बरफोर्स संसद के सदस्य थे। और वह पूरे दास व्यापार व्यवसाय से बहुत नाराज थे, बहुत दुखी थे, जिसका उल्लेख हमने एल्किन्स में किया था।

और वह इस बात से इतना क्रोधित, इतना दुखी था कि विलियम विल्बरफोर्स ने फैसला किया कि वह ब्रिटिश साम्राज्य में गुलामी को खत्म करना अपना जीवन का काम बना लेगा। और इसलिए, विलियम विल्बरफोर्स, यह उसका धर्मयुद्ध बन गया। विलियम विल्बरफोर्स ने एक उन्मूलन समिति शुरू की।

उन्मूलन समिति की शुरुआत 1787 में हुई थी। मैं बस इसे वर्तनी के लिए समझना चाहता था, लेकिन मुझे विल्बरफोर्स पर वापस आना होगा। 1787, एक उन्मूलन समिति शुरू होती है।

अब, उन्मूलन समिति को विल्बरफोर्स और अन्य नेताओं के तहत निर्णय लेना है, लेकिन विल्बरफोर्स यहाँ मुख्य व्यक्ति थे। उन्मूलन समिति को यह तय करना है कि हम जनता को कैसे मनाएँगे। हम जनता को गुलामी समाप्त करने के लिए कैसे मनाएँगे, जबकि ब्रिटिश साम्राज्य में बहुत से लोग अपनी अर्थव्यवस्था के लिए गुलामी पर निर्भर थे? हम जनता को ऐसा करने के लिए

कैसे मनाएँगे? और इसलिए जिस तरह से उन्होंने इसे करने का फैसला किया वह एक तरह से दबाव की राजनीति थी। और उन्होंने दबाव की राजनीति शुरू करने का फैसला किया।

दबाव की राजनीति ने दो रूप लिए। दबाव की राजनीति का पहला रूप था, और हम इसे देखने जा रहे हैं, मुझे उम्मीद है कि हम इसे बुधवार को एक छोटी सी फिल्म क्लिप में देखेंगे। दबाव की राजनीति का पहला रूप था, अमीर लोगों को टेम्स नदी के पास लाना, उन्हें नावों पर नदी में ले जाना, और उन्हें यह महसूस कराना कि वे एक दिन के लिए एक सुंदर नाव यात्रा पर जा रहे हैं।

उन्हें कुछ खाना वगैरह दें। और ये सभी अमीर लोग जो बहुत सारे गुलाम रखते हैं, उन्हें यह एहसास दिलाते हैं कि उनका दिन अच्छा गुज़रने वाला है। हालाँकि, विल्बरफोर्स और उनके साथियों ने जो किया, वह यह था कि जैसे ही वे टेम्स में गए और वे इन प्यारे जहाजों वगैरह में सवार हुए, उन्होंने इन जहाजों, नावों को लाया, और वे उन्हें गुलाम जहाजों के साथ ले आए जो अभी-अभी पश्चिम अफ्रीका से गुलामों को लेकर आए थे।

और गुलाम जहाजों की बदबू इन लोगों को बहुत परेशान करती थी। और विलियम विल्बरफोर्स लोगों से कहते थे, अब उस हवा में सांस लो। यही वो हवा है जिसमें तुम सांस ले रहे हो, और यह मौत की गंध है।

और गुलामों को पकड़कर, आप ही बीच के रास्ते के लिए जिम्मेदार हैं। और वह उन्हें याद रखने के लिए कहता है कि इस जहाज के नीचे जंजीरों से बंधे एक तिहाई लोग तो बच भी नहीं पाए। वे रास्ते में ही मर गए।

तो, दबाव की राजनीति। दबाव की राजनीति के बारे में दूसरी बात याचिकाएँ थीं। दास व्यापार को समाप्त करने के लिए लोगों से हस्ताक्षर करने के लिए याचिकाएँ जारी की गईं।

और ये याचिकाएँ, बेशक, संसद में लाई गईं और संसद में चर्चा की गईं। और जैसे-जैसे विलियम विल्बरफोर्स और अन्य लोग इस तरह की दबाव की राजनीति के साथ आगे बढ़े, इस बात पर वास्तव में गंभीर चर्चा होने लगी कि क्या हमें ग्रेट ब्रिटेन में गुलामी जारी रखनी चाहिए। अब, विलियम विल्बरफोर्स का समर्थन करने वाले व्यक्तियों में से एक जॉन वेस्ले थे।

जॉन वेस्ले की मृत्यु 1891 में हुई। यह जॉन वेस्ले की मृत्युशय्या पर ली गई तस्वीर है। जॉन वेस्ले ने मरने से पहले अपने जीवनकाल में जो आखिरी पत्र लिखा था, वह विलियम विल्बरफोर्स को लिखा गया था।

और वह विलियम विल्बरफोर्स को ब्रिटेन में दास व्यापार को समाप्त करने के लिए दबाव बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित कर रहे थे। वास्तव में, शीर्षक नहीं, बल्कि जॉन वेस्ले ने पत्र में जो छोटा सा वाक्यांश इस्तेमाल किया है, वह यह है कि गुलामी खलनायकों में सबसे बड़ी खलनायकी है। गुलामी खलनायकों में सबसे बड़ी खलनायकी है।

और इसलिए, यहाँ वेस्ली ने विलियम विल्बरफोर्स को गुलामी को समाप्त करने के उनके बहुत ही कठिन कार्य के लिए प्रोत्साहित किया है। यह संसद में गुलाम व्यापार अधिनियम के खिलाफ बोलते हुए विल्बरफोर्स की एक तरह की तस्वीर है। अमेजिंग ग्रेस नाम की एक फिल्म है।

क्या आप में से किसी ने संयोग से यह फिल्म देखी है? अगर आपने अमेजिंग ग्रेस नहीं देखी है, तो आप में से लगभग आधे लोगों ने देखी होगी। इसलिए, अगर आपने अमेजिंग ग्रेस नहीं देखी है, तो हमारे पास, मुझे यकीन है कि हमारे पुस्तकालय में है, बस इसे किराए पर लें या न लें, लेकिन इसे बाहर निकालें और इसे देखें। यह वास्तव में एक उल्लेखनीय फिल्म है।

यह विलियम विल्बरफोर्स और अमेरिका और ग्रेट ब्रिटेन में दास व्यापार के अंत के बारे में है। मैं बस इतना ही कहूंगा, बस यहाँ एक प्लग लगाने के लिए, आप में से जिन्होंने फिल्म देखी होगी, उन्हें पता होगा कि यह गॉर्डन कॉलेज के स्नातक द्वारा लिखी गई विलियम विल्बरफोर्स की जीवनी पर आधारित थी। तो, गॉर्डन कॉलेज के एक पूर्व छात्र ने जीवनी लिखी जिस पर वह फिल्म आधारित थी।

तो, अगर आपको फिल्म देखने का मौका मिले, तो आपको ऐसा जरूर करना चाहिए। ठीक है, मैं आपको बस एक मिनट में विराम देना चाहता हूँ, लेकिन दो तारीखें। सबसे पहले, 1807।

दबाव बनाए रखना पड़ा, लेकिन अंततः 1807 में ब्रिटेन में दास प्रथा को समाप्त कर दिया गया। विलियम विल्बरफोर्स 1807 में ब्रिटेन में इसे समाप्त होते देखने के लिए जीवित रहे। लेकिन आइये विलियम विल्बरफोर्स के समय पर वापस चलते हैं, आइये उनकी तिथियों पर वापस चलते हैं, 1833 में।

मरने से पहले उन्होंने पूरे ब्रिटिश साम्राज्य में दास व्यापार को खत्म होते देखा। तो, यहाँ एक आदमी था, एक ईसाई आदमी। शायद हमें इस बारे में बात करते समय इस बात का ज़िक्र करना चाहिए था, लेकिन यहाँ एक ईसाई आदमी है जो सभी लोगों के लिए न्याय के बारे में ईसाई भावना रखता है। यहाँ एक ईसाई आदमी है जिसके पास एक विचार है जिसने ग्रेट ब्रिटेन में दास व्यापार को खत्म कर दिया।

मुझे बहुत समय लग रहा है, और अब मुझे लगता है कि एक लंबा प्रवचन आने वाला है। शायद आपको ब्रेक न मिले, लेकिन फिर भी, मैं यहीं रुकने वाला हूँ। लेकिन 1833।

अब, ध्यान दें कि अमेरिका में हम अभी तक इस समस्या से नहीं निपट पाए हैं। यह 1833 है, लेकिन हम अभी तक इस समस्या से नहीं निपट पाए हैं और अगले 30 सालों तक भी नहीं निपट पाएंगे। तो, विलियम विल्बरफोर्स।

इसलिए, हम अमेरिका की पृष्ठभूमि के बारे में जानने से पहले ग्रेट ब्रिटेन में दासता के उन्मूलन को देखना चाहते थे। क्या विलियम विल्बरफोर्स की दबाव की राजनीति के बारे में कोई सवाल है, जिसने पहले ब्रिटेन में और फिर ब्रिटिश साम्राज्य में दास व्यापार को खत्म किया? हाँ। उन्मूलन समिति में 18 सदस्य थे; मैं इसे यहीं बता दूँ।

1787 में उन्मूलन समिति थी। अब हम देखेंगे, हमें अभी चिंता करने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन अमेरिका में एक गुलामी विरोधी समिति थी जो उन्मूलन समिति से पहले शुरू हुई थी। हालाँकि, यह ब्रिटिश इतिहास के लिए एक महत्वपूर्ण समिति है।

कुछ और। हाँ। 1807 में ग्रेट ब्रिटेन में गुलामी का उन्मूलन हुआ।

1833 में ब्रिटिश साम्राज्य में गुलामी का उन्मूलन हुआ। तो, यह ग्रेट ब्रिटेन से आगे तक फैल गया। ठीक है।

मैंने आज तुम्हें छुट्टी नहीं दी है। तो, एक बार देख लो। ठीक है।

ठीक है। अब, हम जानना चाहते हैं कि मैं आगे क्या करना चाहता हूँ, और यह सब पृष्ठभूमि है, इसलिए आपने मुझे अभी तक पृष्ठभूमि नहीं छोड़ी है। अब मैं जो करना चाहता हूँ वह यह है कि मैं आपको अमेरिका में आए उन्मूलनवाद के माध्यम से एक कालानुक्रमिक तरह का मार्च देना चाहता हूँ।

तो, मैं यहाँ कुछ तारीखों पर प्रकाश डालना चाहता हूँ जो यह देखने के लिए वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण हैं कि अमेरिका में क्या हुआ ताकि हम उस बिंदु तक पहुँच सकें जहाँ गुलामी समाप्त हो गई। ठीक है। तो, क्या आप इस पर मेरे साथ हैं? ठीक है।

ठीक है। हम 1775 से शुरू करते हैं, एक महत्वपूर्ण तिथि और एक महत्वपूर्ण घटना, 1775 में गुलामी विरोधी समाज की स्थापना। अब, यह दुनिया का पहला गुलामी विरोधी समाज है क्योंकि आप देख सकते हैं कि ब्रिटेन में उन्मूलन समिति की स्थापना इसके बाद की गई थी, लेकिन यह उन्मूलन समिति से पहले की बात है।

इसकी स्थापना केकर्स ने की थी। केकर्स वास्तव में पहले गुलामी विरोधी समाज होने का विशेषाधिकार प्राप्त स्थान रखते हैं। अमेरिका में इसकी स्थापना केकर्स द्वारा इसलिए की गई क्योंकि अब यह पूरा अमेरिका है।

हाँ। यह सब संयुक्त राज्य अमेरिका में हो रहा है, हमारी धरती पर क्या हो रहा है। 1785 में केकर्स द्वारा इसकी स्थापना का कारण, सबसे पहले, गुलामों के मालिक केकर्स को संबोधित करना था।

कुछ केकर थे जो गुलाम रखने लगे थे। उन्हें इसमें कोई समस्या नहीं दिखी। और दूसरे केकरों ने कहा, हाँ, इसमें एक समस्या है।

एक बाइबिल संबंधी समस्या है और एक मानवीय समस्या है। और इसलिए, गुलामी विरोधी समाज की स्थापना 1775 में हुई थी, सबसे पहले केकर्स द्वारा, लेकिन सबसे पहले इस मुद्दे पर साथी केकर्स को संबोधित करने और साथी केकर्स को यह समझाने के लिए कि अगर उनके पास अभी भी गुलाम हैं तो वे अपने गुलामों को छोड़ दें। तो, फिलाडेल्फिया, भगवान आपका भला

करे। फिलाडेल्फिया, केकर्स, 1775, एक गुलामी विरोधी समाज, एक तरह का विशेषाधिकार प्राप्त स्थान रखता है।

ठीक है। तो, अगली तारीख जो मैं बताना चाहता हूँ, वह तारीख आप पहले ही सुन चुके हैं, और वह है 1784. 1784.

क्या किसी को 1784 की तारीख किसी खास वजह से याद है? क्या कुछ याद आता है? 1784. बाल्टीमोर, मैरीलैंड, 1784 में कुछ घटनाएं हुईं, जैसे क्रिसमस सम्मेलन। याद कीजिए, यही वह समय था जब फ्रांसिस एस्बरी को नियुक्त किया गया था।

इसे क्रिसमस सम्मेलन इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह 1784 की क्रिसमस की पूर्व संध्या पर आयोजित किया गया था। लेकिन क्रिसमस सम्मेलन में, निश्चित रूप से, इन लोगों ने कहा, यदि आप मेथोडिस्ट होने जा रहे हैं, तो आप गुलाम नहीं रख सकते। यह जॉन वेस्ले से आता है, जो 1791 तक जीवित रहे, और जॉन वेस्ले ब्रिटेन में गुलामी विरोधी समर्थक थे।

इसलिए, 1784 में, क्रिसमस सम्मेलन ने यह कहते हुए उपाय किए कि यदि आपके पास दास हैं, तो आप मेथोडिस्ट नहीं हो सकते। इसलिए, यह एक महत्वपूर्ण तारीख है। अब, आपको अन्य कारणों से भी उस तारीख को याद रखना चाहिए।

ठीक है। एक और तारीख होगी 1770, 1780, बस सामान्य, 1770, 1780। क्योंकि उस समय, याद रखें, एडवर्ड्सियन नामक लोगों का एक समूह था।

क्या आपको याद है? हमने एडवर्ड्सियन का जिक्र किया था। हमने आपको चार एडवर्ड्सियन के नाम बताए हैं, अगर आप पीछे देखना चाहते हैं कि वे कौन हैं। अब, एडवर्ड्सियन जोनाथन एडवर्ड्स के असली अनुयायी थे, लेकिन जोनाथन एडवर्ड्स के पास दास थे।

याद है? हमने इस बारे में बात की थी। लेकिन एडवर्ड्स के लोग वास्तव में गुलामी विरोधी भावना में आ रहे हैं। और इसलिए, एडवर्ड्स के लोग, और खास तौर पर जोनाथन एडवर्ड्स के अपने बेटे ने अमेरिका में प्रचारकों के रूप में दास व्यापार के खिलाफ बोलना शुरू कर दिया।

तो, एडवर्ड्स के लोगों का यहाँ बहुत शक्तिशाली सांस्कृतिक प्रभाव है क्योंकि वे उपदेश देते हैं, बोलते हैं, और इसी तरह के अन्य काम करते हैं। तो, हम इसका उल्लेख करना चाहते हैं। ठीक है।

हम 1817 का भी उल्लेख करना चाहते हैं। ठीक है। 1817, एक और महत्वपूर्ण तारीख।

तो, हम जो कर रहे हैं वह कालानुक्रमिक रूप से है, हम अमेरिका में, अमेरिकी धरती पर गुलामी विरोधी आंदोलन देख रहे हैं। अब, हम 1817 में आते हैं, और हम अमेरिकन कोलोनाइजेशन सोसाइटी नामक एक समूह की स्थापना के साथ आते हैं। अमेरिकन कोलोनाइजेशन सोसाइटी।

ठीक है। अब, अमेरिकन कोलोनाइजेशन सोसाइटी के पास एक योजना थी। अब, मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि यह एक अच्छी योजना थी।

हम इस योजना में कुछ विफलताएँ देखेंगे, लेकिन पहले मैं योजना के बारे में बता दूँ। अमेरिकन कोलोनाइजेशन सोसाइटी की योजना गुलामों को उनके मालिकों से खरीदने की थी। इसलिए, आप गुलामों को उनके मालिकों से वापस खरीदते हैं क्योंकि अमेरिकन कोलोनाइजेशन सोसाइटी गुलामी को खत्म करना चाहती थी, लेकिन फिर आप उन गुलामों को वापस अफ्रीका भेज देते हैं।

तो, उन्हें लगा कि यह एक अच्छा विचार है। गुलामों को खरीदो और उन्हें उनके वतन वापस भेज दो। तो, उनका इरादा नेक था।

यह एक अच्छा इरादा था, अमेरिकन कोलोनाइजेशन सोसाइटी। इसलिए, बहुत सारे पादरियों और चर्चों ने इसमें भूमिका निभाई। हम अमेरिकन कोलोनाइजेशन सोसाइटी को एक संक्रमणकालीन आंदोलन कहेंगे क्योंकि अमेरिकन कोलोनाइजेशन सोसाइटी पर बहुत हमले हुए थे।

यह बहुत से लोगों के अधीन आया जो इसे पसंद नहीं करते थे, लेकिन यह एक संक्रमणकालीन आंदोलन था। ठीक है। यहाँ वे कारण बताए गए हैं कि लोगों ने अमेरिकन कोलोनाइजेशन सोसाइटी का विरोध क्यों किया।

आप सोचेंगे, पहली नज़र में, कि यह एक अच्छी बात होगी। गुलामों को वापस खरीदना ताकि वे अब गुलाम न रहें, और फिर हम उन्हें घर भेजने की कोशिश कर रहे हैं। तो, आप सोचेंगे कि सतही तौर पर, यह बहुत अच्छा होगा।

अमेरिकन कोलोनाइजेशन सोसाइटी की आलोचना के कारण ये हैं। पहला, उन्होंने वास्तव में गुलामी के संस्थागतकरण से निपटने का काम नहीं किया। उन्होंने वास्तव में संस्थागत समस्या और अन्याय की समस्या आदि से निपटने का काम नहीं किया।

तो, इसने इस संस्थागत बुराई के बड़े मुद्दे को संबोधित करने से ध्यान हटा दिया। तो, यह नंबर एक है। नंबर दो, अमेरिकी उपनिवेशीकरण सोसायटी में कई लोग काले हीनता में विश्वास करते थे।

उनका मानना था कि अश्वेत लोग हीन भावना से ग्रसित थे, और इसी कारण उन्हें गुलाम बनाए जाने की समस्या का सामना करना पड़ा। और इसलिए, अश्वेतों की हीनता के बारे में इस तरह की छिपी हुई धारणा थी। यह एक तरह की समस्या बन जाती है।

तीसरा, इसने देश को अश्वेतों के बीच संभावित नेतृत्व से वंचित कर दिया। क्योंकि अगर आप गुलामों को उनके मालिकों से खरीद सकते हैं और वे अब स्वतंत्र लोग हैं, तो ज़रा सोचिए कि उन स्वतंत्र लोगों में अपने लोगों के बीच और लोगों के बीच नेतृत्व की कितनी क्षमता होगी, शायद लोग

स्वतंत्र हो रहे हों और इसी तरह की अन्य बातें। लेकिन इसने वास्तव में देश को संक्रमण के इस समय में कुछ वास्तविक संभावित अश्वेत नेतृत्व से वंचित कर दिया।

क्योंकि आप क्या कर रहे हैं? आप उन्हें वापस घर भेज रहे हैं। आप उन्हें वापस अफ्रीका भेज रहे हैं। आप उन्हें आज़ाद नहीं कर रहे हैं और फिर कह रहे हैं, ठीक है, अब आपको बोस्टन, फिलाडेल्फिया, न्यूयॉर्क, नंबर तीन में नेतृत्व के पदों पर स्थापित होना चाहिए।

और चौथा, बहुत से लोगों को लगा कि इससे वास्तव में कुछ खास हासिल नहीं हुआ। इससे केवल 4,000 गुलाम ही आजाद हुए; अनुमान है कि इस प्रक्रिया के जरिए करीब 4,000 गुलामों को आजाद कराया गया और वापस अफ्रीका भेजा गया। और समस्या उससे कहीं ज्यादा बड़ी थी।

इसलिए, इस कारण से एक तरह की आलोचना हुई। लेकिन यह अमेरिकन कोलोनाइजेशन सोसाइटी है। और मैं कहूंगा कि यह एक संक्रमणकालीन संगठन है।

1817 में इसकी स्थापना हुई थी। हाँ, नहीं, नहीं, वे थे; उन्होंने वास्तव में गुलामों को मुक्त करने के लिए धन जुटाया था।

उन्होंने वास्तव में उन्हें उनके मालिकों से खरीदा था। लेकिन ऐसा नहीं था, और वे अन्य गुलाम मालिक होने का दिखावा नहीं कर रहे थे या कुछ और। वे खुलेआम थे, मालिकों से गुलाम खरीदे, गुलामों को मुक्त किया, और फिर उन्हें अफ्रीका वापस भेज दिया।

नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता क्योंकि वे उस पैसे से दूसरे गुलाम खरीद लेंगे। और इसलिए, यह गुलाम मालिकों के लिए कोई समस्या नहीं होने वाली थी, जो यहाँ एक और समस्या थी। लेकिन, या शायद उन्हें पैसे की ज़रूरत थी।

शायद उनमें से कुछ को वास्तव में पैसे की ज़रूरत थी, और सभी गुलामों को नहीं। इसलिए, नहीं, यह गुलाम मालिकों के लिए कोई समस्या नहीं थी। वे गुलामों को बेचने के लिए तैयार लग रहे थे।

क्या इस बात का कोई रिकॉर्ड है कि अफ्रीका वापस गए आज़ाद लोगों के साथ क्या हुआ? जैसे, कैसे, मेरा मतलब है, अगर वे, जैसे, पुरे, जैसे, धार्मिक, आप जानते हैं, यहूदी या जो भी, जैसे, वे वापस कहाँ गए? ठीक है, ठीक है। हाँ, मैंने कभी नहीं, मैंने कभी इसका पालन नहीं किया। मुझे यकीन है कि अगर हमने अमेरिकन कोलोनाइजेशन सोसाइटी को देखा और देखा, तो मुझे यकीन है कि इस पर और इसी तरह के शोध प्रबंध लिखे गए होंगे।

और मैंने इस पर ध्यान नहीं दिया। हम अभी इस पर ध्यान नहीं देंगे, लेकिन हम किसी दिन इस पर ध्यान देंगे। और इसलिए, मैंने इस स्मृति पर ध्यान नहीं दिया।

तो, मुझे इस बात पर यकीन नहीं है। मुझे पता है कि अमेरिकी दृष्टिकोण से, यह एक विफलता थी, मूल रूप से एक विफलता। यह थोड़ा संक्रमणकालीन था।

लोग मानते हैं कि, ठीक है, हम यहाँ समस्या को देख पा रहे हैं, लेकिन मुख्य रूप से, यह एक विफलता थी। ठीक है, मुझे एक और बात बतानी है, फिर हमें जाना होगा। इसलिए, हम इसे कालानुक्रमिक रूप से देख रहे हैं।

अब मैं वर्ष 1835 पर आना चाहता हूँ। 1835 अमेरिकी ईसाई इतिहास में एक बहुत ही महत्वपूर्ण तारीख थी। और ऐसा इसलिए क्योंकि 1835 में, ओहियो में, ओबरलिन कॉलेज की स्थापना हुई थी।

और पहले राष्ट्रपति चार्ल्स ग्रैंडिसन फ़िनी नाम के एक साथी थे। वे धर्मशास्त्र के प्रोफेसर थे और फिर ओबरलिन कॉलेज के अध्यक्ष बन गए। तो, यह, यह, यह वास्तव में महत्वपूर्ण हो जाता है।

नहीं, वह पहले थे; वह पहले प्रोफेसर थे, और फिर वह 1851 में राष्ट्रपति बने। लेकिन वह ओबरलिन के संस्थापकों में से एक थे। ठीक है, सबसे पहले, वास्तव में जल्दी से, क्या आप में से कोई ओबरलिन कॉलेज गया है? क्या आपने ओबरलिन का परिसर देखा है? क्या ओहियो में कोई यहाँ है? नहीं? ठीक है।

ठीक है। ठीक है, ओबरलिन कॉलेज की स्थापना अमेरिका में पहली गुलामी उन्मूलनवादी संस्था के रूप में की गई थी। इसकी स्थापना एक गुलामी विरोधी उन्मूलनवादी संस्था के रूप में की गई थी।

इसलिए, यह एक है, और क्योंकि फिन्नी और अन्य संस्थापक उन्मूलनवादी थे, वे दासता के उन्मूलन में विश्वास करते थे। इसलिए, यह अमेरिकी ईसाई इतिहास में विशेषाधिकार का स्थान रखता है। लेकिन यह भी है, जैसा कि हम बाद में देखेंगे, यह अमेरिका का पहला सह-शिक्षा कॉलेज भी था।

तो, यह पुरुषों और महिलाओं को प्रवेश देने वाला पहला कॉलेज सह-शिक्षा था। वास्तव में, जैसा कि हम आगे भी देखेंगे, अमेरिका में धर्मशास्त्र की डिग्री प्राप्त करने वाली पहली महिला ने इसे ओबरलिन कॉलेज से प्राप्त किया। और फिर वह दीक्षित हो गई।

उसका नाम एंटोनेट ब्राउन था। हम इस बारे में बाद में बात करेंगे। लेकिन ओबरलिन कॉलेज की स्थापना एक उन्मूलनवादी संस्था के रूप में की गई थी; यह कहना बहुत कठोर है, आप जानते हैं, कि इस संस्था के मिशन का कारण गुलामी के उन्मूलन के सिद्धांत की घोषणा करना है।

यह बहुत सुंदर है, यह अमेरिकी ईसाई इतिहास में एक बहुत बड़ा कदम है, जिसकी स्थापना 1835 में इन ईसाइयों ने की थी। तो, ठीक है, हम इसे बुधवार को उठाएंगे और इसे जारी रखेंगे। आपका दिन शुभ हो।

यह डॉ. रोजर ग्रीन द्वारा अमेरिकी ईसाई धर्म पर दिए गए उनके व्याख्यान हैं। यह 19वीं सदी में रोमन कैथोलिक धर्म पर सत्र 12 है।